बच्चों के ऊपर रिस्पॉन्सिबिलिटी जो होती है। अगर अपनी रिस्पॉन्सिबिलिटी को न समझेंगे तो बाप से इतना वर्सा नहीं पा सकेंगे। घाटा डाल देंगे अपन को। महावीर कोई एक नहीं होते हैं, महावीर बहुत होते हैं। इतने ढेर बच्चे हैं। राजाई पर भी तो चढ़ना है बच्चों को। ... करेंगे इतना ऊँच पद पायेंगे। जो बाप है और देखते हैं कि हमारे मम्मा–बाबा...। जिस्मानी मम्मा–बाबा हुआ ना। एडॉप्टेड हुआ तो भी जिस्मानी तो हुआ ना। मम्मा–बाबा इतना ऊँच पद पाते हैं तो हम क्यों नहीं पा सकेंगे! तो इस समय पुरुषार्थ की बड़ी ... है। भले माया है, ये कान को पट लेती है। नाक से जैसे हम करते हैं ना– कान पकड़ो, नाक पकड़ो, फिर पीटो। ठीक है। वैसे ही माया भी ऐसे ही इनको पकड़ती रहती है। कभी कान से पकड़ लेती है, कभी नाक से पकड़ लेती है, कभी कान थपथपा देती है। माया कोई कम नहीं है। इसलिए खबरदार रहना। अरे, खबरदारी कौन–सी रखें? बस यही, बाप की याद। बाप की याद में रह करके खुश होना। भले धंधा–धोरी कोई भी होता रहे, कुछ भी होता रहे। नफा है, नुकसान है, घाटा वगैरह। इनसे बुद्धि का योग टूटना क्यों चाहिए! बाप की याद क्यों टूटना चाहिए! स्त्री है, पुरुष है। चलो, स्त्री या पुरुष बीमार पड़ते हैं..... तो भी लव तो रहता है ना उनके। इसमें भी अगर कोई बीमार है या कुछ है तो अपने बाप को क्यों भूलना चाहिए या सजनी अपने साजन को क्यों भूलना चाहिए! बीमार है या घाटा है या कुछ भी है। संबंध जिससे बहुत फायदा होने वाला है उनको क्यों भूलना चाहिए; परन्तु माया भुलाय देती है और फिर बहुत बच्चे भूल भी जाते हैं; क्योंकि बाबा की सर्विस भी बड़ी गम्भीर है और मनुष्य हैं बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि। देखो, तुम तो मत्था मारती हो, देखते रहती हो कि कितना माथा मारते हैं बच्चों से, कितना समझाते हैं– बहुत अच्छा, बहुत... समझते कुछ भी नहीं हैं। समझाने समय भासती है कि समझाते बहुत अच्छा है और बाप से वर्सा ज़रूर लेना चाहिए। फुर्सत नहीं। फुर्सत नहीं है तो बहुत ही... यानी उनको ये मालूम नहीं पड़ता है कि ये जो अभी कमाई के लिए कहते हैं– फुर्सत नहीं। कमाई है ना! जो कोई व्यापारी है या गवर्मेन्ट सर्विस में है, है तो सभी उनकी कमाई ना। ये बैठता ही नहीं है कि ये कमाई 21 जन्म की, ये तो ज़रूर करनी चाहिए। ये तो फिर हाथ में भी नहीं आयेगी। ये बुद्धि में कोई के बैठता नहीं है। देखो, इतनी प्रदर्शनी की है यहाँ बॉम्बे में। एक का भी ऐसा समाचार नहीं है कि वो एकदम घायल हो पड़ा कि बाबा आया हुआ है। उनसे बेहद का वर्सा मिलना है कल्प पहले मुआफिक। हम फिर से सो देवी–देवता राज पद पा सकते हैं। ऐसे एक भी नहीं निकलता है। नहीं तो मुख से वो कहे ना– ये तो बिल्कुल बरोबर है। बेहद का बाप आया है तो उनसे ज़रूर वर्सा लेना चाहिए। वो कोई की बुद्धि में नहीं बैठता है। क्यों? बाबा ने समझाया है कि सभी बिचारे बंदरबुद्धि हैं। दृष्टान्त भी लिखा हुआ है कि ये रतन बंदरों के आगे...। वहाँ तो लिखा है कि भई, मुख में डाल देंगे (तो) फेंक देते हैं। तुम हर एक हैं रूप और बसन्त। तुम ये मुख से रतन निकालते हो। कोई–2, ऐसे नहीं कि सभी कोई निकालते हैं। थोड़े बच्चे हैं, जिनको पूरा निश्चय भी है और अभी भी बाप के लव में हैं। उनसे सर्विस भी हो सकती है, होती है। कोई भी हालत में स्थूल–सूक्ष्म सर्विस में फतह पानी है; क्योंकि इस समय की फतह देखो फॉर एवर कल्प–कल्पांतर फॉर एवर। आगे चल करके तुम सब देख लेंगे जो–2 भी बचेंगे, रहेंगे कि कौन–2 कल्प–2 किस–2 पद को पाते हैं। इतना क्लीयर बहुत होगा पिछाड़ी को। इसलिए बाप भी कहते हैं– बच्चे, कोशिश करके कुछ न कुछ याद करते रहो। सर्विस में थोड़ा कुछ मुँह देते रहो तो अच्छा ही है। है तो कुछ भी नहीं, बस सिर्फ कह देना है बाबा कहते हैं– मुझे याद करो और वर्सा लो। ''बाबा कहते हैं'' ये बड़ा मीठा अक्षर है। शिवबाबा कहते हैं– देह के और सब छोड़ दो। ये जो जप,यज्ञ,तप,दान,पुण्य,तीर्थ वगैरह जो कोई भी कुछ करते हैं, मेरे को पा नहीं सकते हैं यानी मेरे से वर्सा ले नहीं सकते हैं। सिर्फ वो तैयार हो जावे जो अच्छी तरह से भाषण वगैरह कर सके। ये भी होने का है। सर्विस तो वृद्धि को पाना ही है। (म्युज़िक बजा) मीठे–2, सर्विसेबुल बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का याद–प्यार और गुडनाइट।